



भेड़पालन में पोषक आहार है जरूरी

प्रशांत कुमार मल्लिक* और शिव मंगल प्रसाद**

॥ भेड़पालन, शुष्क एवं अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में रहने वाले कृषकों की आय तथा आजीविका का मुख्य साधन है। इन क्षेत्रों में चारा एवं भोजन की कमी वाले काल में भेड़ों को पोषणाहार की बेहद कमी का सामना करना पड़ता है। इससे इनमें अनेक प्रकार के रोग एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। ये इनकी उत्पादकता और प्रजनन क्षमता को प्रभावित करती हैं। इन क्षेत्रों का वर्गीकरण मौसम में कम वर्षापात वाली श्रेणी में किया गया है, जहां चारा उत्पादकता बहुत ही कम है। सूखे के मौसम में प्राकृतिक चरागाहों और खेतों में चारा उत्पादन में कमी के साथ उसकी गुणवत्ता में भी कमी देखी जाती है। ॥

भेड़ों से उच्च उत्पादकता प्राप्त करने के लिए उनके खान-पान पर उचित ध्यान देना आवश्यक है। इनकी शारीरिक अवस्था के अनुसार दी गयी चारे की मात्रा से उचित पोषण के साथ अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

भेड़ों के लिए आहार प्रबंधन

दूध पीने वाले मेमने: जन्म के 2-3 घंटों के बाद मेमनों को खीस पिलानी चाहिए। यह अनेक प्रकार से लाभदायक होती है। जन्म के प्रथम 3-5 दिनों तक मेमनों को मां के निकट रखना चाहिए, ताकि वे समय-समय पर दूध पी सकें। फिर 300 से 400 ग्राम दूध दो बार में पिलाना चाहिए। इसके बाद खुद से आहार बनाकर देना चाहिए। इसके लिए 40

भाग मक्का, 30 भाग मूंगफली की खली, 10 भाग गेहूं का चोकर, 13 भाग राइस ब्रॉन, 5 भाग छोआ, 2 भाग मिनरल मिक्सर एवं 1 भाग लवण (नमक) को मिलाना चाहिए। इस आहार में प्रति क्विंटल की दर से 20 ग्राम विटामिन 'ए', 'बी' एवं 'डी' मिश्रित करना चाहिए। इसको 15-200 ग्राम प्रतिदिन की दर से 3 सप्ताह के बाद चारे के साथ खिलाना चाहिए।

दूध छोड़ चुके मेमने: दूध छोड़ चुके मेमनों का आहार उनकी उम्र एवं शारीरिक वजन पर निर्भर करता है। अच्छे आनुवंशिक गुणों वाले मेमनों का आहार प्रबंधन यदि सही से किया जाये तो उनका शारीरिक वजन 200-250 ग्राम प्रतिदिन की दर से बढ़ता है। यदि मेमने बहुत ही उन्नत चारागाह में दिनभर घास चरते हैं और शाम के समय उन्हें 300 ग्राम दाना मिश्रण रोज दिया जाये तो छह माह में उनका वजन 30-33 कि.ग्रा. हो जायेगा।

*भाकृअनुप-केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर (राजस्थान); **भाकृअनुप-केन्द्रीय वर्षाश्रित उपराज भूमि चावल अनुसंधान, केन्द्र, हजारीबाग (बिहार)

भेड़ों के लिए चारे

धान्य एवं घास कुल वाला पशु चारा

घास पूरे संसार का सर्वव्यापी पौधा है। घास अति कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी जीवित रहने और किसी तरह बर्बाद नहीं होने वाली वनस्पति है। इसके ऊपरी हिस्से को पशुओं द्वारा खाए जाने, किसी तरह जलाने या फिर पानी में डुबाये जाने पर भी जड़ों से यह पुनः विकसित हो जाती है। धान्य एवं घास कुल वाली पशु चारा फसलें अच्छी बढ़वार के लिए जानी जाती हैं। इनमें फूल आने के बाद गुणवत्ता में कमी आ जाती है। मक्का, ज्वार, बाजरा एवं जई पशुओं को ऊर्जा एवं शक्ति देने वाली चारा फसलें हैं। इनमें सुगमता से उग जाना, अच्छी बढ़वार, उत्तम मानकों वाला उत्पादन देने वाले गुण पाए जाते हैं।

शिम्व वाली चारा फसलें

शिम्व वाली चारा फसलें बहुत दिनों तक अपनी गुणवत्ता को बनाये रखती हैं, क्योंकि इनकी बढ़वार की प्रक्रिया जारी रहती है। इनका वर्गीकरण विशिष्ट श्रेणी में किया गया है। इनमें प्रचुर मात्रा में प्रोटीन पाया जाता है और ये नाइट्रोजन पोषण के लिए मृदा पर पूरी तरह से आश्रित नहीं होती। बरसीम लूसर्न, उड़द, मूंग इत्यादि इसी कुल की चारा फसलें हैं।

वृक्ष एवं झाड़ीदार चारा

चारे के रूप में वृक्षों के पत्तों को खिलाया जाना प्राचीनकाल से ही प्रचलित है। घास चरने वाले पशुओं के लिए सूखे के दौरान घासों में प्रोटीन पोषक तत्व नगण्य होते हैं, ऐसे में पेड़ के पत्तों से इनकी पूर्ति होती है। शिम्व कुल वाले वृक्षों एवं झाड़ीदार पौधों के पत्ते भेड़ों के लिए बहुत ही अच्छे चारा साबित होते हैं और ये उनका प्रिय आहार भी हैं।



मेमनों को दूध पिलाते हुए

सारणी: विभिन्न प्रकार/उम्र की भेड़ों के लिए आहार

श्रेणी	दूध	दाना आहार	सूखा चारा	हरा चारा
दूध पीने वाले मेमने	शारीरिक वजन का दसवां भाग-6-30 दिनों तक, पंद्रहवां भाग-31-60 दिनों तक एवं बीसवां भाग 61-90 दिनों तक	मिश्रण आहार 15 दिनों से शुरू	दलहनी फसलों का भूसा 15 दिनों से शुरू	हरा चारा 15 दिनों से शुरू
दूध छोड़ चुके मेमने	-	प्रतिदिन 200 ग्राम से शुरू करके 300 ग्राम तक	आरम्भिक दिनों में 300 ग्राम से शुरू करके 500 ग्राम तक	-
मादा मेमने	-	प्रतिदिन 300 ग्राम	500 ग्राम	500 ग्राम
वयस्क मादा	-	-	1.0 कि.ग्रा.-चराई द्वारा	500 ग्राम
गाभिन मादा	-	300 ग्राम अंतिम 60 दिनों के लिए	700 ग्राम चराई द्वारा	500 ग्राम
दूध देने वाली मादा	-	300 ग्राम प्रथम 90 दिनों के लिए	700 ग्राम चराई द्वारा	1.0 कि.ग्रा.
वयस्क नर	-	300 ग्राम	1.0 कि.ग्रा. चराई द्वारा	500 ग्राम

*नवजात मेमनों को शारीरिक वजन का दसवां भाग खीस दिन में तीन बार पिलायें



पूरक आहार लेते मेमने

मादा मेमने

यदि मादा मेमने बहुत ही उन्नत चारागाह में दिनभर घास चरती हैं और शाम के समय इन्हें 300 ग्राम दाना मिश्रण रोज दिया जाये, तो ये सही समय पर प्रजनन हेतु शारीरिक वजन और वयस्कता



पोषक आहार प्रबंधन

प्राप्त कर लेंगी। मादा और नर मेमनों को अलग-अलग रखना चाहिए।

प्रजनन योग्य मादा

प्रजनन काल से पहले और बाद में दिए गए संतुलित आहार, मिनरल मिश्रण, दाना इत्यादि पर उत्पादन क्षमता निर्भर करती है। वसारहित बड़े शरीर वाली मादा ज्यादा मेमने जनती हैं। इनमें ज्यादा अंडोत्सर्जन हो उसके लिए इन्हें प्रोटीनयुक्त दाना मिश्रण एवं शिम्ब वाले पेड़ के पत्तों को खिलाना चाहिए।

गर्भित मादा

गर्भकाल के अंतिम डेढ़ महीने में उन्हें अपने शरीर के पोषण के साथ गर्भ में पल रहे शिशुओं के विकास के लिए 300 ग्राम प्रतिदिन की दर से प्रोटीनयुक्त दाना मिश्रण की जरूरत होती है। इसके साथ में 8-10 घंटे अच्छे चारागाह में चराई भी जरूरी है। गर्भकाल में किसी भी प्रकार की आहार संबंधी लापरवाही छोटे आकार के मेमनों के जन्म को प्रेरित करती है, जिनकी बाद में मृत्युदर ज्यादा होती है।

दूध पिलाने वाली मादा

भारतीय देसी नस्ल की मादा भेड़ों की दुग्ध उत्पादन क्षमता बहुत ही कम होती है, जो कि 500-800 ग्राम प्रतिदिन है। यह भी सिर्फ चराई पर निर्भर रहने पर स्थिर नहीं रहती। इस समय पूरक आहार के रूप में पेड़ के पत्तों के साथ 300 ग्राम दाना मिश्रण, जो गर्भित मादा के लिए अनुशंसित किया गया है, देना चाहिए।

वयस्क प्रजनन योग्य नर

इसको 300 ग्राम प्रतिदिन की दर से दाना मिश्रण खिलाना चाहिए। इसके साथ में 8-10 घंटे अच्छी चारागाह में चराई भी जरूरी है। यदि चारागाह से अच्छे प्रकार का



वृक्ष की पत्तियों से आहार

घास नहीं मिल रहा हो, तो उन्हें हरे चारे के रूप में बरसीम, लूसर्न, जई, मक्का इत्यादि भी देना चाहिए।

छांटी गयी मादा भेड़

छः वर्ष से ज्यादा उम्र की मादाएं, जो कि ज्यादा उत्पादन देने लायक नहीं रहतीं, वैसी मादाओं की तरफ पशुपालकों द्वारा ध्यान नहीं दिया जाता है। इससे उनके शारीरिक वजन में गिरावट होने लगती है। इन मादा भेड़ों को छांटकर बेच देना चाहिए। यदि उनको कुछ दिनों के लिए रखना पड़े, तो उन्हें कम दाम वाले प्रोटीनयुक्त आहार जैसे यूरिया उपचारित गुड़ के ब्लॉक देने चाहिए। इसके साथ में 8-10 घंटों के लिये चराई भी जरूरी है। उनको पूरक आहार के रूप में शिम्ब वाले पेड़ के पत्ते भी खिलाये जा सकते हैं। कोशिश करनी चाहिए कि उनको जल्द से जल्द बेचकर हटा दिया जाये।